विन्ध्य के आंचल में . . . —वि. श्री. वाकणकर, प्रस्तुतकर्ता, आलोक मेहता, हिन्दुस्तान समाचार, मण्डी हाउस, नई दिल्ली-१

विंध्य के आंचल में तीन लाख साल पुरानी सभ्यता

—वि० श्री० वाकणकर

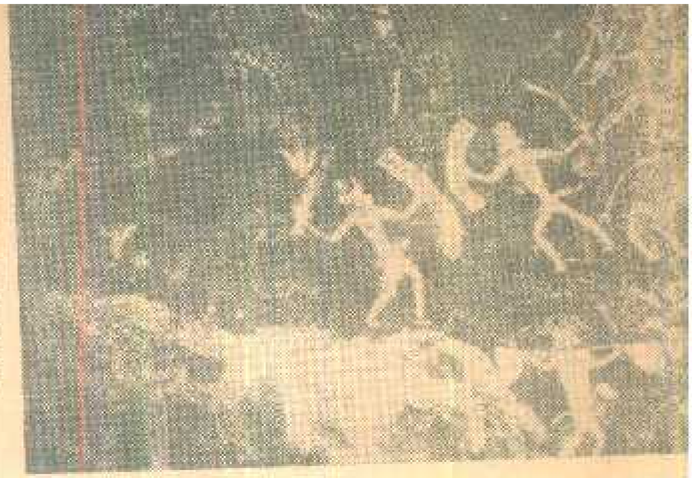

भीमबेटका की एक गुफा का भित्ति-चित्र

'भीमबेटका' की चट्टानी शृंखलाओं की ओर मेरा आकर्षित होना एक अजब इत्तफाक की बात है। यह एक दिलचस्प किस्सा भी हो सकता है, क्या [illegible] के किसी [illegible] ने इस ओर मेरा या अन्य किसी का ध्यान नहीं खींचा था। हुआ यों कि आज से करीब १५ वर्ष पूर्व अर्थात १९५७ में [illegible] किसी काम से भोपाल से नागपुर की ओर ट्रेन से जा रहा था। मेरा सफर चाहे पैदल हो या रेल से हो, भारत में हो अथवा यूरोप में—प्राकृतिक दृश्यों की ओर मैं अधिक खिंचता रहा हूं। इसी मनोवृत्ति के कारण खिड़की से [illegible] आगे बढ़ने के [illegible] कुछ मिनटों में ही मुझे अचानक विन्ध्याचल की श्रेणियां दिखाई दीं, जिन में 'भीमबेटका' भी थी। इन की बनावट देखते हुए मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा कि हो न हो इन पर्वत-श्रेणियों में शैलचित्रों वाली गुफाएं मिल सकती हैं।

लेखक देश के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता हैं। इन्हों ने हाल ही में विन्ध्याचल की श्रेणियों में उत्खनन कर के भारत के प्राचीनतम मानवीय अवशेषों को प्राप्त कर इतिहास को एक नई दिशा दी है। इन्हों ने 'भीमबेटका' पर्वत श्रेणी के इस उत्खनन में तीन लाख वर्ष से अधिक प्राचीन पाषाणकालीन शस्त्र एवं दस हजार वर्ष पूर्व बनाए गए 'शैलचित्रों' को प्रकाश में लाने में सफलता प्राप्त की। विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के यह अध्यक्ष हैं।

फिर यह विचार विश्वास में बदला और अगला स्टेशन आते ही मैं नागपुर का रास्ता छोड़ कर पैदल ही इन पर्वत-श्रेणियों के जंगल में घुसता चला गया। ये पर्वत-श्रेणियां भोपाल से २६ मील दक्षिण में हैं। इस पर्वत की चट्टानों के नजदीक पहुंचने पर, गुफाएं होने का आभास मिला। अन्दर जाने पर इन गुफाओं में मानव द्वारा बनाए गए शैलचित्र (रॉक पेंटिंग्स) मिले। घूमते-घूमते वहां एक साधु बाबा से भेंट हुई, जिन्हों ने यह भी बताया कि ऐसे शैलचित्र इन शृंखलाओं में दूर-दूर तक फैले हैं।

उस दिन कुछ शैलचित्र खोजने पर मैं आसपास की पहाड़ियों के अन्य स्थल में गया, जहां पहले ही दिन करीब ५०-६० गुफाएं भी खोज पाने में सफलता मिली, किन्तु उत्खनन का कार्य उस समय प्रारम्भ नहीं किया जा सका। इस के लिए वैधानिक कठिनाइयां भी थीं। फिर भी प्रति वर्ष कुछ समय निकाल कर मैं इन गुफाओं की ओर जाता रहा तथा शैलचित्रों की खोज, शैली एवं काल-निर्णय सम्बन्धी शोध कार्य करता रहा।

१९६१ में डा. [illegible] को साथ ले कर 'भीमबेटका' पहुंचा और इस में इस क्षेत्र में उत्खनन करने की योजना बनाई। वैधानिक कार्यवाही पूरी करने [illegible]

[illegible] जो बहुत अधिक संख्या में हैं। ये शैल या शिला ५ से १० हजार वर्ष पूर्व बनाए गए थे। इन के अलावा करीब तीन लाख वर्ष पूर्व के पाषाणकालीन शस्त्र, औजार तथा [illegible] और मौर्य काल की मुद्राएं भी उत्खनन में मिलीं।

इन में सब से अधिक महत्वपूर्ण तत्व पाषाणकालीन अस्त्र एवं औजार हैं जो प्राचीन मानव-बस्तियों के प्रमाण हैं। साथ ही, एक ही स्थान पर [illegible] शैलचित्रों का इतना विशाल भण्डार अब तक दुनिया में कहीं उपलब्ध नहीं हुआ है।

भारत में केवल पंजाब के सोहनघाटी क्षेत्र में ही ऐसी गुफाएं मिली थीं, किन्तु वहां भी इतना बड़ा भण्डार नहीं था। हां, अफ्रीका आदि कुछ देशों में इस से भी पुराने अवशेष मिल चुके हैं।

ये शैलचित्र गेरू, हिरौंजी, खड़िया मिट्टी तथा हरी पत्ती आदि को पानी में मिला कर पर्वतीय गुफाओं में बनाए गए थे, जिस से [illegible] असर इन पर न हो। इसी कारण ये चित्र अभी भी ज्यों-के-त्यों सुरक्षित हैं। इन चित्रों में आखेट, नृत्य, कौटुम्बिक जीवन, अग्नि-पूजा, पशु-पालन इत्यादि का चित्रण काफी विविधता एवं सुन्दरता से किया गया है। ये चित्र एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य का आभास भी देते हैं। वह यह कि प्रागैतिहासिक काल के चित्रों में मानव-मानव का युद्ध नहीं दिखाया गया है, किन्तु इतिहास युग अर्थात [illegible] ईसवी पूर्व के बाद के अधिकांश चित्र युद्ध एवं [illegible] के हैं। इस से यह आभास [illegible] है कि प्रागैतिहासिक मानव में संघर्ष की [illegible] नहीं थी।

इस उत्खनन में पाषाण युग के करीब [illegible] औजार और अस्त्र मिले हैं। कुछ स्थानों [illegible] औजारों के [illegible] का सामान [illegible]

अज्ञात कारणों से छोड़ दिया था तथा [illegible] पचास हजार वर्ष बाद आदि-मानव [illegible] यहां आ गई। यह मानव अनेक [illegible] बनाता था। यह आदि-मानव यहां [illegible] एवं रुक रहा।

इस के बाद पत्थर के नए ढंग के [illegible] काम पड़ा आए। इन के [illegible] रहते थे। ये १५ हजार वर्ष पूर्व [illegible] से १० हजार वर्ष पूर्व के मध्य यहां [illegible] माना जाता। यह विभिन्न औजार [illegible] धनुर्धारी था तथा हाथी, गेंडे, बैल, [illegible] आदि का शिकार करता था। [illegible] परिचित था तथा [illegible] में अपने [illegible] शिकार एवं अन्य अनुभवों का [illegible]

अभी हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं हो पाए हैं, क्यों कि प्राचीनतम [illegible] के अनेक स्थानों पर मिल चुके हैं, [illegible] १० हजार वर्ष से अधिक प्राचीन [illegible] प्रमाण नहीं मिले हैं। हम इन [illegible] अर्थात तीन लाख वर्ष पूर्व के मानव [illegible] प्राप्त करना चाहते हैं। 'भीमबेटका' [illegible] मध्य ऐतिहासिक युग के तीन [illegible] हैं, पर हम इस से और अधिक [illegible] खोज चाहते हैं।

मेरी आशा ही नहीं, विश्वास [illegible] वर्ष तक आदि-मानव की [illegible] सफलता प्राप्त कर लेंगे। यह [illegible] बड़ी [illegible] उपलब्धि [illegible] लिए हम इस क्षेत्र की सभी गुफाओं [illegible] उत्खनन करेंगे। हमारा [illegible] शुरू ही हुआ है।

[आलोक मेहता]

भीमबेटका की गुफाओं में [illegible] औजारों का निर्माण [illegible]

[illegible] गया [illegible]

[illegible] जिन [illegible]

भारत का [illegible]

अपने [illegible]

गया।

[illegible] दिन [illegible]

[illegible]

किया कर बताया।